रजिस्ट्री सं० डी०(डी०)-72 REGISTERED No. D. (D.)-72

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 116] नई दिल्ली, बुधवार, जून 25, 1980/आषाढ़ 4, 1902
No. 116] NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 25, 1980/ASADHA 4, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जून, 1980

निधन सूचना

सं. 3/6/80-पब्लिक.—भारतीय गणतन्त्र के चौथे राष्ट्रपति, श्री वराहगिरि वेंकटगिरि का मंगलवार 24 जून, 1980 को प्रातः 0700 बजे अचानक निधन हो गया । प्रसिद्ध ट्रेड-यूनियन नेता, श्री गिरि का श्रमिक वर्गों से निकट का सम्बन्ध रहा । वे सादगी और सौम्यता की मूर्ति तथा भारतीय परम्परा की श्रेष्ठता, अच्छाई और आदर्श के प्रतीक थे ।

श्री गिरि का जन्म 10 अगस्त, 1894 को तत्कालीन मद्रास प्रेसिडेन्सी (अब उड़ीसा) के गंजाम जिले में बरहामपुर में हुआ था । बरहामपुर में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के बाद श्री गिरि उच्च अध्ययन के लिए आयरलैंड के डब्लिन विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए । यहां वे आयरलैंड के स्वतन्त्रता संग्राम से प्रभावित हुए और उनको डीवेलेरा जैसे नेताओं से प्रेरणा मिली । प्रथम विश्व युद्ध के दौरान श्री गिरि बार के सदस्य हुए और 1916 में भारत वापस आये ।

वापस आने पर, श्री गिरि श्रमिक आन्दोलनों में रुचि लेने लगे और उन्होंने अपने ही शहर बरहामपुर में वकालत शुरू की । बाद में वे होमरूल लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भी शामिल हो गए । महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन के दौरान श्री गिरि ने वकालत छोड़ दी और वे इस आन्दोलन में कूद पड़े । वे गिरफ्तार हुए और जेल गये ।

1922 में, वे श्रमिक वर्गों के संगठन कार्य में जुट गये और तब से उनके कार्य का प्रमुख क्षेत्र ट्रेड यूनियन आंदोलन रहा । अगले ही वर्ष वे अखिल भारतीय रेल कर्मचारी महासंघ के संस्थापकों में से एक संस्थापक बने । वे दो बार, पहले 1926 में और फिर 1942 में ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए । विख्यात ट्रेड यूनियन नेता के रूप में उन्होंने 1927 में जनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक सम्मेलन में भाग लिया और 1931-32 में लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व किया । वे 1934 से 1937 तक केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य रहे जहां उन्होंने विशेषकर श्रमिक मसलों पर एक प्रसिद्ध वक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त की ।

श्री गिरि के 1936 में मद्रास विधान सभा के लिए निर्वाचित हो जाने के बाद उनके जीवन में नया मोड़ आया । वे 1937 में मद्रास राज्य मंत्रि-मण्डल में श्रम मंत्री के रूप में शामिल हुए । 1946 में मद्रास विधानमण्डल के लिए वे पुनः निर्वाचित हुए और फिर लगभग एक वर्ष तक श्रम मन्त्री रहे । इसके तुरन्त बाद उन्हें श्री लंका में भारत का उच्चायुक्त नियुक्त किया गया।

1952 के प्रथम आम चुनावों में श्री गिरि लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए और मई, 1952 में सितम्बर, 1954 तक वे केन्द्र में श्रम मन्त्री के पद पर रहे ।

1957 से 1960 तक श्री गिरि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे । इसके बाद वे 1960 से 1965 तक केरल के राज्यपाल और 1965 से 1967 तक कर्नाटक के राज्यपाल रहे । उन्हें भारतीय समाज-कार्य सम्मेलन का अध्यक्ष भी चुना गया और

इस हैसियत से उन्होंने देश में सामाजिक कार्य को नई वैचारिक दृष्टि और नया आयाम प्रदान किया ।

1967 में उन्होंने भारत के उप-राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया और साथ ही राज्य सभा के पदेन सभापति बने । उन्होंने अपनी निष्पक्षता और भद्रता के फलस्वरूप सदन का सम्मान अर्जित किया ।

अगस्त, 1969 में वे भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए और अगस्त, 1974 में उन्होंने इस पद को छोड़ा । उन्होंने इस उच्च पद को गरिमा और गहन सूझ-बूझ से सुशोभित किया । उन्होंने कई देशों का दौरा किया और इससे उन देशों के साथ भारत के सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाया । उनकी राष्ट्र के प्रति सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष में उन्हें "भारत रत्न" के उच्चतम अलंकरण से विभूषित किया गया ।

सेवा निवृत्ति के पश्चात् भी वे सार्वजनिक मामलों में गहरी रुचि लेते रहे ।

एक प्रसिद्ध समाजवादी के रूप में उन्होंने सदैव सैद्धान्तिक दृष्टिकोण की अपेक्षा व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया । श्री गिरि ने देश में सामाजिक विचारधारा में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी दो महत्वपूर्ण पुस्तकें "इंडस्ट्रियल रिलेशन्स" और "लेबर प्राबलम्स इन इंडियन इंडस्ट्री" हैं ।

उनके निधन से, देश ने एक महान् देशभक्त, एक स्वतन्त्रता सेनानी, अनुभवी ट्रेड यूनियन नेता और श्रमिक वर्ग का एक सच्चा मित्र एवं एक वयोवृद्ध नेता खो दिया है ।

एस. एम. एच. बर्नी, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th June, 1980

OBITUARY

No. 3/6/80-Pub.—At 0700 hrs. on the morning of Tuesday the 24th June 1980, death came suddenly to Shri Varahagiri Venkatagiri, the fourth President of the Republic of India. An eminent Trade Union Leader, Shri Giri was closely associated with the working classes. Simple and unassuming, he symbolised what is good, noble and exemplary in the Indian tradition.

Shri Giri was born on the 10th August, 1894, at Berhampore in Ganjam District, in the then Presidency of Madras (now in Orissa). After his early education at Berhampore, Shri Giri joined the University of Dublin in Ireland for higher studies. Here he came under the spell of the freedom struggle in Ireland and was inspired by leaders like De Valera. Shri Giri was called to the Bar during the World War I and returned to India in 1916.

On his return Shri Giri started taking keen interest in the labour movement and started practice at his home town Berhampore. Later, he joined the Home Rule League, and the Indian National Congress. During the Non-Cooperation Movement launched by Mahatama Gandhi, Shri Giri gave up his practice and plunged himself into his movement. He was arrested and suffered imprisonment.

In 1922, he closely identified himself with the organisation of the working classes and from that time onwards his main sphere of work was the trade union movement. In the following year, he became one of the founders of the All India Railwaymen's Federation. He was twice elected President of the Trade Union Congress, first in 1926, and later in 1942. As an eminent Trade Union leader he attended the International Labour Conference at Geneva in 1927, and also represented the workers at the Second Round Table Conference in London in 1931-32. He was a Member of the Central Legislative Assembly from 1934 to 1937 where he soon made his mark as a prominent speaker particularly on labour questions.

A turning point in Shri Giri's career was his election to the Madras Legislative Assembly. He joined the State Ministry in Madras as a Labour Minister in 1937. He was re-elected to the Madras Legislature in 1946 and again held the portfolio of Labour for about a year. Soon after, he was appointed India's High Commissioner to Ceylon (now Sri Lanka).

In the first General Elections in 1952, Shri Giri was elected to the Lok Sabha and held the office of Union Minister of Labour from May, 1952 to September 1954.

Shri Giri held office of the Governor of U.P. from 1957 to 1960. Thereafter, he held office of the Governor of Kerala from 1960 to 1965 and that of the Governor of Karnataka from 1965 to 1967. He was also elected the President of the Indian Conference of social work and in that capacity he imparted new depth and dimension to social work in the country.

In 1967, he held office of the Vice-President of India and, as ex-officio Chairman of Rajya Sabha, he won the respect of the House for his impartiality and gentleness.

He was elected as the President of India in August, 1969 and he laid down the reins of this office in August, 1974. He adorned this high office with dignity and deep understanding. He visited many foreign countries and thereby strengthened India's relations with them. He was awarded the highest distinction of "Bharat Ratna" for his meritorious services to the Nation.

Even after retirement he continued to take keen interest in public affairs.

A socialist of long standing, he was always pragmatist and avoided doctrinaire approach. Shri Giri has made significant contribution to the social thinking in the country and his two important books are 'Industrial Relations' and 'Labour problems in Indian Industry'.

In his passing away, the country has lost a great patriot, a freedom fighter, a veteran Trade Union leader, a sincere friend of the working classes and an elder statesman.

S. M. H. BURNEY, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1980